ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 283-284

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

भारतीय कलाकारों पर पाश्चात्य तकनीक का प्रभाव : धनवाद

1. कु0 पूजा
2. प्रो0 अलका तिवारी

1. शोध अध्येत्री, 2. प्रोफेसर– एन.ए.एस. कालेज, मेरठ, समन्वयक–ललित कला विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0) भारत

Received-18.12.2023, Revised-24.12.2023, Accepted-28.12.2023 E-mail: contactmail.pooja@gmail.com

सारांश: ***चित्रकला के माध्यम से चित्रकार अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति को प्रकट करता है तथा इसमें लीन होकर आत्म विभोर हो जाता है। आधुनिक काल में वास्तु निरपेक्षता बढ़ रही है इसका प्रारंभ यूरोप से 20वीं शताब्दी में हुआ। यूरोपीय कला में आधारभूत परिवर्तन लाने में धनवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। धनवाद का मुख्य सरोकार की प्रस्तुति को जैसे हम देखते हैं वैसे उसे सामने नहीं रखा गयावत और स्पेस में उनका स्थान अधिक महत्वपूर्ण हो गया यॉनी एक ही कैनवस या कागज पर एक ही चीज को कई रूपों में प्रस्तुत किया गया।***

आदित्य आधुनिक काल में प्रभाववादी रंग योजना के समान ही रूप निर्माण की दृष्टि से धनवाद का बहुत महत्व है द्य अत्यंत आवश्यक ढांचें के समान एकदम सरल हो गए और यह सरल रूप भी सुंदर समझे जाने लगे परस्पर अच्छामिति ज्यामितीय तालो, एक साथ कई कोनों से देखे गए संयुक्त रूप से यथार्थ जगत को एक नए ढंग से प्रस्तुत किया। यह विशेषताएं मिस्र की कला, गोथिक कला राजपूत तथा मुगल लघु चित्रों मैं भी थी। भारतीय मूर्तियों में भी मुद्रा में आकृति का मुख्य स्तन एवं नितंब एक ही दिशा में दिखाए जाते थे।

कुंजीभूत शब्द–धनवाद अभिव्यक्ति, समकालीन, आकृति, आधुनिक, अमूर्त, प्रभावत, आधुनिक काल, वास्तु निरपेक्षता, प्रभाववादी रंग।

एक आंदोलन एक आंदोलन के रूप में धनवाद का जन्म दरअसल प्रभववाद की प्रक्रिया में हुआ था। धनवाद यूरोपियन कल का एक क्रांतिकारी आंदोलन था तथा आधुनिक काल की प्रथम अमूर्त कला शैली के रूप में जाना जाता है। इस कला आंदोलन में सेजान की कला की प्रमुख तत्वों ज्यामितिकता, सहकलिकता (दो या दो से अधिक पदार्थों को ठीक एक ही समय गठित होना) तथा पैसेज अर्थात गलियारें के समान छोटे–छोटे आकर को विकसित कर एक नवीन शैली का प्रतिपादन किया गयाद्य चित्रकार पूर्ण रूप से आंतरिक प्रेरणा पर निर्भर रहता है एवं उसे पर बाह्य दृश्य सृष्टि का बंधन नहीं रहताद्य बाहरी रूप केवल जागृत करने का कार्य करता है। पिकासो एवं ब्रॉक धनवाद के दो सबसे बड़े कलाकार थे। धनवाद का बुनियादी विचार यही था कि कलाकार को तीन आयामों में जो दिए उसे एक सपाट सतह पर पूरी तरह कैसे दिखाया जाए यूरोप में धनवाद एक चुनौती के रूप में था पर भारत में इसे इसे चुनौतियों के रूप में नहीं लिया गया यही कारण है कि यहां एक सामूहिक आंदोलन के रूप में किसी पीढ़ी में नहीं दिखाया गया।

समकालीन कलाकारों का योगदान : गगनेंद्रनाथ ठाकुर– पुनरुत्थानवादी कलाकारों के मध्य रहकर भी गगनेंद्र नाथ ने विदेशी शैलियों को अपनाया उन्होंने सर्वप्रथम भारतीय देश के लिए इस शैली का प्रयोग किया। इनको भारत के शुरुआती आधुनिक कलाकारों में गिना जाता है तथा अन्य विदेशी शैलियों के समन्वय से अपनी कला का एक नितांत मौलिक रूप विकसित किया सर्वप्रथम गगनेंद्रनाथ ने 1920 में अपने स्याही रेखा चित्रों में इसका प्रयोग किया। स्वप्न को अत्यधिक व्यंजक बनाने में उन्होंने धनवाद का प्रयोग कियाद्य उनके चित्रों में श्वेत श्याम भाग प्रकाश छाया के साथ–साथ वस्तुओं के दलों और आयाम को भी प्रस्तुत किया है। वास्तविक वस्तुओं को शामिल करना आधुनिक काल में सबसे महत्वपूर्ण विचारों में से एक की शुरुआती थी। इस प्रकार गगनेंद्रनाथ ने चित्रों में उपस्थित रहस्य में कल्पना तथा अनुपम रहस्य में कल्पना का अनुपम आकर्षण एक कल्पना तथा अनुपम आकर्षण की तुलना उनकी कृतियां हमको यह प्रेरणा प्रदान करती हैं कि कल की समस्याओं पर स्वयं विचार करें और स्वतः ही उनका हल खोज निकाले। आज उनकी कृतियां कला जगत के लिए प्रेरक है।

फोटो : द्वारका के मंदिर और जादूगर

जॉर्ज किट– धनवाद का प्रयोग पिकासो से प्रेरित होकर 1940 में किया और भारतीय मूर्तिकला के रूप को विकास के रूपों के समान केवल रेखाओं द्वारा ही बनाने का प्रयत्न किया।

बेंद्रे ने भी धनवाद के प्रयोग से आकृतियों को भारतीय शास्त्रीयता और सौंदर्य के साथ समन्वय किया है। 1940 के लगभग दृश्य चित्रों धनवादी रेखांकन किया। आकृतियों को प्रतिरूप करने के लिए सीमेंट और लेटराइट मोटर का प्रयोग और एक व्यक्तिगत शैली के रूप में किया द्यजिसका उपयोग जिसमें आधुनिक पश्चिमी और भारतीय पूर्व शास्त्रीय मूर्तिकलां मूल्य को एक साथ लाया, जो

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- IV, Issues-30, YEAR- Oct.-Dec.-2023

समान रूप से क्रांतिकारी था।

जहाँगीर साबावाला– स्वतंत्रता के बाद भारत के अनेक कलाकार धनवाद से प्रभावित हुए, इसमें जहांगीर साबावाला सबसे प्रमुख है द्य जहांगीर साबावाला अपनी धुन के ऐसे कलाकार थे, जो कैनवास पर ही बोलते थे असल जीवन में पश्चिम की दृष्टि उन्होंने भारतीय दृश्य तथा आकृतियों को विशेष विश्लेषणात्मक धनवादी प्रगति पर आधारित कियाद्य जहांगीर साबावाला के कुछ चित्र अकादमी शैली में भी बनाए और प्रभाववाद शैली में भी उनके उपरांत पुणः धनवाद शैली में चित्रांकन करने लगे। उनके लैंडस्केप और मानव कृतियां ने एक नया विश्व रिकॉर्ड बनाया था। उनकी एक कलाकृति ऑनलाइन नीलामी में 1.7 करोड़ में बिकी थी। उनके चित्र अनुभव के विरल संसार में ले जाते हैं। त्रिलोक कोल ने भी यही विधि अपनाई किंतु उनके संपूर्ण कार्य विशेषताओं 1960 के आसपास के कार्य से स्पष्ट है कि उन्होंने धनवाद के सरल रूप के ही धन्यवाद के दृश्य अमूर्त शैली में अंकित की है पर उसमें उन्होंने अपनी निजी शैली विकसित कर ली है। लन्दन में जहाँगीर से रायल अकादमी की रूढ़िवादी पद्धति तथा आधुनिक प्रवृत्तियों का अध्ययन किया। उसके पश्चातू पेरिस में काफी समय तक प्रभाववादी तथा अन्य शैलियों का अनुशीलन करने के पश्चात् घनवादी शैली के परिष्कृत चित्रकार आन्द्र ल्होते की कार्यशाला में पहुँच गये। 1958 में भारत आने पर उन्होंने शास्त्रीय तथा प्रभाववादी शैलियों में कार्य न करके घनवादी चित्रांकन आरम्भ किया। तबसे लेकर अपने विकास के प्रत्येक चरण में वे घनवाद के ही विभिन्न रूपों के प्रयोग अधिक संख्या में करते रहे हैं, किन्तु उनकी कला कभी अमूर्त नहीं हुई। उनके चित्तरों में जाने पहचाने रूप किसी–न–किसी विधि से उपस्थित रहे हैं। इनके पीछे जहाँगीर की स्वयं की प्रकृति तो है ही, चित्रों के भारतीव दर्शकों का मनोभाव (एप्रोच) भी है जो उनकी कला के विषय में चर्चा करने का एक सामान्य आधार बनता है।

निष्कर्ष– भारत की अनेक आधुनिक चित्रकार धनवाद से प्रेरणार ले रहे हैं पर यह उनकी शैली के प्रधान विशेषता अथवा प्रमुख पक्ष के रूप में नहीं है। हुसैन, शांति दुबे, के0एस0 कुलकर्णी आदि ने अपने को धनवाद शैली के आधार पर विभिन्न विधियां से विकसित किया है। ज्योति भट्ट आदि की कला में भी प्रभाव है। घनवाद में यथार्थ जगत को प्रस्तुत किया गया, किन्तु एक निश्चित दृष्टिकोण से नहीं। वस्तुत एक समय में किसी भी पदार्थ या विषय को अनेक खण्डों या पंद्यों में संयोजन के माध्यम से चित्र में सपाट रंगों, आकारों तथा पुनः प्रस्तुत किया है। कलाकार विषय में से किस प्रकार तत्वों का चयन करता है उन्हें ग्रहण करता है। अपनी प्रेक्षण, क्षमता और स्मरण दोनों को किस प्रकार प्रमुख आकार में समन्वित करता है। इसके लिए धनवादी कलाकारो ने देखने की प्रक्रिया पर सहज विचार किया। इस प्रकार घनवादियों ने विचारार्थ प्रस्तुत किया कि एक पदार्थ मे अनेक दृष्टिकोणो का समाहार है। क्या एक पदार्थ का स्मरण एक ही परिप्रेक्ष्य, कोष तथा धनवादी कलाकार बाद मे भले ही अपने–अपने रास्तो पर चले गए, पर इस कला आंदोलन ने उन्हें पेंटिंग को एक ऐसी समझ दी, जो दूसरे चित्रो के जन्म के लिए जरूरी थी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बृहद आधुनिक काल कोष : विनोद भारद्वाज वाणी प्रकाशन पृष्ठ संख्या – 26.
2. आधुनिक भारतीय चित्रकला : डॉव जीव केव अग्रवाल ललित कला प्रकाशन पृष्ठ संख्या–126/220/222.
3. यूरोप के आधुनिक कला : डॉव ममता चतुर्वेदी राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर पृष्ठ संख्या–96.
4. भारतीय चित्रकला एवं मूर्ति कला का इतिहास : डॉक्टर रिता प्रताप राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी पृष्ठ संख्य– 324.
5. भारतीय कला : डॉ राजेंद्र कुमार व्यास राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी पृष्ठ संख्या –94/95.

*****